पर्यावरणीय सम्मेलन (जैवविविधिता)

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन क्या हैं?

अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण सम्मेलन कानूनी रूप से एक बाध्यकारी समझौता है जो वैश्विक पर्यावरणीय खतरे से निपटने या इसे कम करने हेतु सरकारों को मिलकर कार्रवाई करने का आह्वान करता है। हालाँकि विविध हितों वाले संप्रभु राष्ट्रों द्वारा इस तरह की कार्रवाई के लिये किसी समझौते पर पहुँचना आसान नहीं है।

- हाल के दशकों में वैश्विक और क्षेत्रीय स्तरों पर पर्यावरण संबंधी अंतर्राष्ट्रीय चिंताओं को दूर करने के लिये इस तरह के समझौतों में वृद्धि हुई है।

इन सम्मेलनों की आवश्यकता क्यों है?

- कन्वेंशन और इसके प्रोटोकॉल का अनुसमर्थन एवं कार्यान्वयन कई पार्टियों के लिये एकतरफा कार्रवाई की तुलना में स्वास्थ्य तथा पर्यावरणीय प्रभावों को अधिक लागत प्रभावी ढंग से कम करेगा।
- यह आर्थिक लाभ भी प्रदान करता है क्योंकि सामंजस्यपूर्ण कानून और सीमाओं के पार मानक, पूरे देश में उद्योग के लिये एक समान अवसर प्रदान करेंगे तथा पर्यावरण एवं स्वास्थ्य की कीमत पर हितधारकों को एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने से रोकेंगे।
- ऐसे कारक जिस पर हमारी आजीविका निर्भर करती है मानव स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाते हैं, खाद्य सुरक्षा को प्रभावित करते हैं, आर्थिक विकास में बाधा डालते हैं, जलवायु परिवर्तन में योगदान करते हैं और पर्यावरण को क्षति पहुँचाते हैं
- कन्वेंशन इन अंतर्संबंधों पर चर्चा करने के लिये एक मंच प्रदान करता है और नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिये कार्रवाई करता है।

रामसर कन्वेंशन क्या है?

- वेटलैंड्स पर रामसर कन्वेंशन वर्ष 1971 में कैस्पियन सागर के दक्षिणी तट पर ईरानी शहर रामसर में अपनाई गई एक अंतर-सरकारी संधि है।
- यह वर्ष 1982 में भारत के लिये लागू हुई। वे आर्द्रभूमि जो अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के हैं, उन्हें रामसर स्थल घोषित किया गया है।
- कन्वेंशन का मिशन दुनिया भर में सतत् विकास की दिशा में योगदान के रूप में स्थानीय और राष्ट्रीय कार्यों तथा अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से सभी आर्द्रभूमि का संरक्षण तथा बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करना है।
- मॉन्ट्रियल रिकॉर्ड अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के आर्द्रभूमियों की सूची में आर्द्रभूमि स्थलों का एक रजिस्टर है जहाँ पारिस्थितिकी में परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं या तकनीकी विकास, प्रदूषण या अन्य मानवीय हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप होने की संभावना है। इसे रामसर सूची के हिस्से के रूप में बनाए रखा गया है।
- अब तक भारत में 49 नामित आर्द्रभूमि मौजूद हैं।
- वर्तमान में भारत के दो आर्द्रभूमि मॉन्ट्रियल रिकॉर्ड में हैं:
    - a. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान)
    - b. लोकतक झील (मणिपुर)।
- विश्व आर्द्रभूमि दिवस हर साल 2 फरवरी को मनाया जाता है। वर्ष 2022 के इस अवसर पर दो नए रामसर स्थल (अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के आर्द्रभूमि), गुजरात में खिजड़िया वन्यजीव अभयारण्य और यूपी में बखिरा वन्यजीव अभयारण्य की भी घोषणा की गई।

वन्यजीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES) क्या है?

- CITES एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है जिसका राज्य और क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण संगठन स्वेच्छा से पालन करते हैं।
- यह प्रकृति के संरक्षण के लिये अंतर्राष्ट्रीय संघ (आईयूसीएन) के सदस्यों की बैठक में वर्ष 1963 में अपनाए गए एक प्रस्ताव के परिणामस्वरूप तैयार किया गया था।
- CITES जुलाई 1975 में लागू हुआ। वर्तमान में 184 सदस्य (देश या क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण संगठनों सहित) हैं।
- इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि जंगली जानवरों और पौधों के नमूनों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से उनके अस्तित्व को खतरा न हो।
- CITES सचिवालय को UNEP (संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम) द्वारा प्रशासित किया जाता है और यह जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में स्थित है।
- यह कन्वेंशन के कामकाज में समन्वय, सलाहकार और सर्विसिंग की भूमिका निभाता है।
- CITES के लिये पार्टियों का सम्मेलन (COP) कन्वेंशन का सर्वोच्च निर्णय लेने वाला निकाय है और इसमें इसके सभी पक्ष शामिल हैं।
- हालाँकि CITES कानूनी रूप से पार्टियों के लिये बाध्यकारी है, लेकिन यह राष्ट्रीय कानूनों का स्थान नहीं लेता है।

- इसके बजाय यह प्रत्येक पार्टी द्वारा मान्य ढाँचा प्रदान करता है, जिसे यह सुनिश्चित करने के लिये अपना घरेलू कानून अपनाना होगा कि CITES को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाए।

बॉन कन्वेंशन क्या है?

- इसे जंगली जानवरों की प्रवासी प्रजातियों (CMS) के सम्मेलन के रूप में भी जाना जाता है। यह एकमात्र ऐसा सम्मेलन है जो जंगल से प्रजातियों को हटाने से संबंधित है। यह वर्तमान में दुनिया भर से 173 प्रवासी प्रजातियों की रक्षा करता है।
- भारत ने गुजरात के गांधीनगर में 17 से 22 फरवरी, 2020 तक CMS के 13वें COP की मेज़बानी की।
- यह कन्वेंशन वर्ष 1983 में लागू हुआ। कन्वेंशन का संचालन करने वाले सचिवालय की स्थापना वर्ष 1984 में हुई थी।
- 1 नवंबर, 2019 तक कन्वेंशन में 133 पार्टियाँ शामिल थे।
- **कन्वेंशन के दो परिशिष्ट हैं:**
    - **परिशिष्ट I:** उन प्रवासी प्रजातियों को सूचीबद्ध करता है जो लुप्तप्राय हैं या विलुप्त होने के कगार पर हैं।
    - **परिशिष्ट II:** उन प्रवासी प्रजातियों को सूचीबद्ध करता है जिनकी संरक्षण की स्थिति प्रतिकूल है और जिनके संरक्षण एवं प्रबंधन के लिये अंतर्राष्ट्रीय समझौतों की आवश्यकता है।
    - CMS राज्यों के कर्तव्य को उनकी राष्ट्रीय सीमाओं/अधिकार क्षेत्र के भीतर रहने वाली या गुज़रने वाली प्रजातियों की रक्षा करने के लिये निर्दिष्ट करता है।

प्रकृति के संरक्षण के लिये अंतर्राष्ट्रीय संघ क्या है?

- IUCN एक सदस्यता संघ है जो विशिष्ट रूप से सरकार और नागरिक समाज दोनों संगठनों से बना है।
- इसे वर्ष 1948 में बनाया गया, यह प्राकृतिक दुनिया की स्थिति और इसकी सुरक्षा के लिये आवश्यक उपायों पर वैश्विक प्राधिकरण है।
- **इसका मुख्यालय स्विट्ज़रलैंड में है।**
- संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN लाल सूची पौधों और जानवरों की प्रजातियों की वैश्विक संरक्षण स्थिति को दर्शाने वाली दुनिया की सबसे व्यापक सूची है।
- यह प्रजातियों के विलुप्त होने के जोखिम का मूल्यांकन करने के लिये मात्रात्मक मानदंडों के एक सेट का उपयोग करती है। ये मानदंड अधिकांश प्रजातियों और दुनिया के सभी क्षेत्रों के लिये प्रासंगिक हैं।
- IUCN रेड लिस्ट कैटेगरी मूल्यांकन की गई प्रजातियों के विलुप्त होने के जोखिम को परिभाषित करती है। इसमें नौ श्रेणियाँ अमूल्यांकित (NE) से विलुप्त (EX) तक हैं। गंभीर रूप से लुप्तप्राय (CR), लुप्तप्राय (EN) और कमज़ोर (VU) प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा माना जाता है।
- इसे जैविक विविधता की स्थिति के लिये सबसे आधिकारिक मार्गदर्शक के रूप में मान्यता प्राप्त है।
- यह सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) और आइची (जैवविविधता) लक्ष्यों के लिये एक प्रमुख संकेतक भी है।

ग्लोबल टाइगर फोरम क्या है?

- जीटीएफ एकमात्र अंतर-सरकारी अंतर्राष्ट्रीय निकाय है जिसकी स्थापना इच्छुक देशों के सदस्यों द्वारा बाघ की रक्षा के लिये एक वैश्विक अभियान शुरू करने के लिये की गई है।
- इसका गठन वर्ष 1993 में नई दिल्ली, भारत में बाघ संरक्षण पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी की सिफारिशों पर किया गया था।
- यह नई दिल्ली, भारत में स्थित है।

मरुस्थलीकरण का मुकाबला करने के लिये संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन क्या है?

- UNCCD की स्थापना वर्ष 1994 में हमारी भूमि की रक्षा और पुनर्स्थापना तथा एक सुरक्षित, न्यायसंगत एवं अधिक टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने के लिये की गई थी।
- यह मरुस्थलीकरण और सूखे के प्रभावों को दूर करने के लिये स्थापित एकमात्र कानूनी रूप से बाध्यकारी ढाँचा है।
- हाल ही में भारत के केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री ने कोटे डी आइवर (पश्चिमी अफ्रीका) में UNCCD के COP15 को संबोधित किया।
- कन्वेंशन में 197 पार्टियाँ शामिल हैं, जिनमें 196 देश और यूरोपीय संघ हैं।
- कन्वेंशन भागीदारी, साझेदारी और विकेंद्रीकरण के सिद्धांतों पर आधारित है, यह भूमि क्षरण के प्रभाव को कम करने और भूमि की रक्षा करने के लिये एक बहुपक्षीय प्रतिबद्धता है ताकि सम्मेलन सभी लोगों को भोजन, पानी, आश्रय और आर्थिक अवसर प्रदान कर सके।
- कन्वेंशन सरकारों, वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, निजी क्षेत्र और समुदायों को दुनिया की बंजर भूमि को पुनः प्रवास योग्य बनाने और प्रबंधित करने के लिये एक साझा दृष्टिकोण के ज़रिये एकजुट करता है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम क्या है?

- UNEP (यूएन पर्यावरण) एक वैश्विक पर्यावरण प्राधिकरण है जो वैश्विक पर्यावरण एजेंडा निर्धारित करता है, संयुक्त राष्ट्र प्रणाली के भीतर सतत् विकास के पर्यावरणीय आयाम के सुसंगत कार्यान्वयन को बढ़ावा देता है।
- इसकी स्थापना संयुक्त राष्ट्र महासभा (UNGA) द्वारा जून 1972 में मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (स्टॉकहोम सम्मेलन) के परिणामस्वरूप हुई थी।

- UNEP और विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO) ने नवीनतम विज्ञान के आधार पर जलवायु परिवर्तन का आकलन करने के लिये वर्ष 1988 में जलवायु परिवर्तन पर अंतर-सरकारी पैनल (IPCC) की स्थापना की।
- इसकी स्थापना के बाद से यूएनईपी ने बहुपक्षीय पर्यावरण समझौतों (MEA) के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निम्नलिखित नौ विदेश मंत्रालयों के सचिवालयों की मेज़बानी वर्तमान में यूएनईपी द्वारा की जाती है:
    - जैव विविधता पर कन्वेंशन (CBD)
    - वन्यजीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (CITES)
    - जंगली जानवरों की प्रवासी प्रजातियों के संरक्षण पर कन्वेंशन (CMS)
    - ओज़ोन परत के संरक्षण के लिये वियना कन्वेंशन
    - पारा पर मिनामाता सम्मेलन
    - खतरनाक अपशिष्टों की सीमा पार गतिविधियों के नियंत्रण और उनके निपटान पर बेसल कन्वेंशन
    - स्थायी कार्बनिक प्रदूषकों पर स्टॉकहोम कन्वेंशन
    - अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कुछ खतरनाक रसायनों और कीटनाशकों के लिये पूर्व सूचित सहमति प्रक्रिया पर रॉटरडैम कन्वेंशन

UPSC सिविल सेवा परीक्षा विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)

Q.1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये: (वर्ष 2019)

1. रामसर कन्वेंशन के तहत भारत सरकार की ओर से भारत के क्षेत्र में सभी आर्द्रभूमि की रक्षा और संरक्षण करना अनिवार्य है।
2. आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) नियम, 2010 भारत सरकार द्वारा रामसर कन्वेंशन की सिफारिशों के आधार पर तैयार किये गए थे।
3. आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) नियम, 2010 में प्राधिकरण द्वारा निर्धारित आर्द्रभूमि के जल निकासी क्षेत्र या जलग्रहण क्षेत्रों को भी शामिल किया गया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3
(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (C)

Q.2. प्रकृति और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिये अंतर्राष्ट्रीय संघ (IUCN) और वन्यजीवों एवं वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों (CITES) में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं? (वर्ष 2015)

1. IUCN संयुक्त राष्ट्र का एक अंग है और CITES सरकारों के बीच एक अंतर्राष्ट्रीय समझौता है।
2. प्राकृतिक वातावरण को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने के लिये IUCN दुनिया भर में हज़ारों फील्ड प्रोजेक्ट चलाता है।
3. CITES उन राज्यों के लिये कानूनी रूप से बाध्यकारी है जो इसमें शामिल हुए हैं, लेकिन यह कन्वेंशन राष्ट्रीय कानूनों की जगह नहीं लेता है।

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2 और 3

उत्तर: (B)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/environmental-conventions-biodiversity